JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिन्दी बालसाहित्य का स्त्रोत : लोकसाहित्य

Dr. Anita Patidar

HOD of Art Department

Shri Umiya Kavya Mahavidyalaya

सारांश :

हिन्दी बालसाहित्य के विकासक्रम की परंपरा अनगिनत वर्षों से चली आ रही हैं, जिसका उद्देश्य केवल बच्चों का मनोरंजन करना ही नहीं, अपितु उनके भविष्य का संतुलित विकास करना, जिससे अतीत का स्मरण भी हो, वर्तमान की समझ हो, तथा भविष्य की जिज्ञासा भी हो। बच्चों का बालसाहित्य से सीधा संबंध होता हैं। बालसाहित्य एक ओर बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने का कार्य करता है, तो वही दूसरी ओर अच्छे संस्कार डालकर उनके भावी जीवन की नींव मजबूत करता है बालसाहित्य की शुरुआत उसी दिन हुई जब मानव ने इस धरती पर जन्म लिया, शायद उससे भी पहले प्रकृति में जितनी भी ध्वनियाँ हैं जैसे नदियों की कल–कल आवाज, वर्षा की बुँदे टप–टप गिरती, पत्ते सर–सर करते, ये सभी आवाजे बालगीत रूप में बच्चों को हँसाना, किलकिलाना, यह एक काव्य है। अमीर खुसरों की पहेलियाँ, मुकरियाँ सदियों से बच्चों का मनोरंजन करती आ रही हैं।

Keywords:

लोकसाहित्य, बालमन, संस्कृति, सभ्यता, समृद्धि, परम्परा, निर्मल, लोककथाएं, कहानियां, बचपन, मनोरंजन, धरोहर, लोकप्रिय, पौराणिक, नीतिपरक, खेलकूद।

प्रस्तावना :

बालसाहित्य का उद्भव लोकसाहित्य से ही माना गया है। संसार की सभी भाषाओं के लोक साहित्य का बालसाहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा लोकसाहित्य ने ही बालसाहित्य की नींव सुदृढ़ की और उसके विकास में भी सहायक रहा है। लोकसाहित्य तो बच्चों का आनंद है, क्योंकि यह किसी भी जाति के बचपन का काव्यात्मक पाण्डित्य होता है तथा लोकसाहित्य का क्षेत्र बहुत व्यापक माना गया है। लोकसाहित्य में मानव–जीवन की अभिव्यक्ति रहती है। लोकसाहित्य की रचना सोद्देश्य होती है, इनमें असत्य पर सत्य की विजय दिखाकर लेखक शाश्वत मूल्यों को प्रतिष्ठित करता है। लोकसाहित्य से बच्चों को सीख मिलती है कि हमेशा सच्चाई की राह पर चलना चाहिए। जय प्रकाश भारती इन देश–विदेश की लोक–कथाओं के प्रति बहुत ही अधिक अग्रहशील रहे– ''लोक साहित्य में सामाजिक वर्णन अधिक मात्रा में उपलब्ध रहता है। समाज के अध्ययन की बहुमूल्य सामग्री इन कथाओं और गीतों में प्राप्त होती है। लोक–गीतों, गाथाओं एवं कथाओं में मनुष्यों के रहन–सहन आचार–विचार, खान–पान, रीति–रिवाज आदि का सच्चा चित्र देखने को मिलता है। लोक–कथाओं में समाज और राष्ट्र बोलता है।''1

''हिन्दी बालसाहित्य की इमारत संस्कृत बालसाहित्य और लोक कथाओं की नींव पर खड़ी है। लोक कथाओं की प्रमुख विशेषता यह है कि इनका रचनाकार और रचनाकाल दोनों ही अज्ञात होते है, अतः इस काल की आरंभिक सीमा का निर्धारण नहीं किया जा सकता, किन्तु इस काल की विशिष्टताओं के आधार पर इसकी अंतिम सीमा 1850 निर्धारित की जा सकती है।''2

लोकसाहित्य वह साहित्य है, जो जन सामान्य का साहित्य है। जिसके द्वारा देश, प्रदेश की संस्कृति, सभ्यता, समृद्धि का मूल्यांकन होता है। प्रत्येक क्षेत्र में दादा–दादी, नाना–नानी तथा परिवार के अन्य सदस्य बच्चों को रात में सोते समय छोटी–छोटी नैतिकता की कथाएँ सुनाया करते थे, तथा मनोरंजन के लिए नाटक भी खेलते थे। जिसे दूर–दूर से लोक

देखने आते थे। गाँवों में लोग अधिकतर मुहावरों तथा कहावतों का प्रयोग भी करते है। ये लोक कथाएँ बच्चों को हमेशा प्रिय रही हैं। लोक जीवन में व्याप्त विश्वासों, परम्पराओं तथा अनुभवों ने जिन कथा, कहानियों एवं गीतों को जन्म दिया, उनसे बच्चों का भरपूर मनोरंजन हुआ। इस प्रकार लोकसाहित्य की व्यापकता ने जन्म से लेकर मृत्यु तक स्त्री, पुरूष, बच्चे सभी की सम्मिलित संपत्ति है। जिसके सबसे ज्यादा बच्चे अधिकारी है।

आशा शैली के अनुसार–''सृष्टि के हर हिस्से के मानव–मन की सोच में कहीं कोई अंतर नहीं, मुझे यह बात लोक–कथाओं का संग्रह करते समय महसूस हुई। मानव एक ही तरह से सोचता है, क्योंकि बहुत–सी लोक कथाएँ अनेक भागों में थोड़े–थोड़े परिवर्तन के साथ प्रचलित होती है। सारे विश्व में एक ही प्रकार की विचार धारा साधारणजन को आन्दोलित करती है।3

लोकसाहित्य का अर्थ है, साधारणजन और उसका साहित्य। लोक सामान्यतः अनपढ़, गँवार, ग्रामीण, आदि रूप में लिया जाता है। लोक साहित्य को परम्परा और रूढ़ियों को ढोने वाला समझकर इसे अलग रखा जाता है। लोक कथाएँ पता नहीं कब से कही जा रही है तथा मानव मन की इन गुत्थियों में उलझती–सुलझती ये कथाएं सभी मानव जाती को लुभाती आ रही है। लोकसाहित्य उतना ही स्वाभाविक होता है, जितना जंगल में खिलने वाला फूल, उतना ही स्वच्छ होता हैं जितनी आकाश में उड़ने वाली चिड़िया, उतना ही सरल व पवित्र होता है, जितनी गंगा की निर्मल धारा। इन सभी का मिला जुला रूप लोकसाहित्य होता है। लोक साहित्य का प्रांरभ आदिकाल से होता है, जब लिखने का चलन नहीं था, जिसका रूप मौखिक था। जिन बच्चों ने इन्हें सुना, उन्होंने बड़े होकर अपने बच्चों को सुनाया, ये अनुभव मौखिक रूप में चलते रहे, जो परम्परा बन गए। परंपरागत लोक साहित्य कभी–कभी बच्चों पर अमिट छाप छोड़ जाता है।4 बाल लोकसाहित्य को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

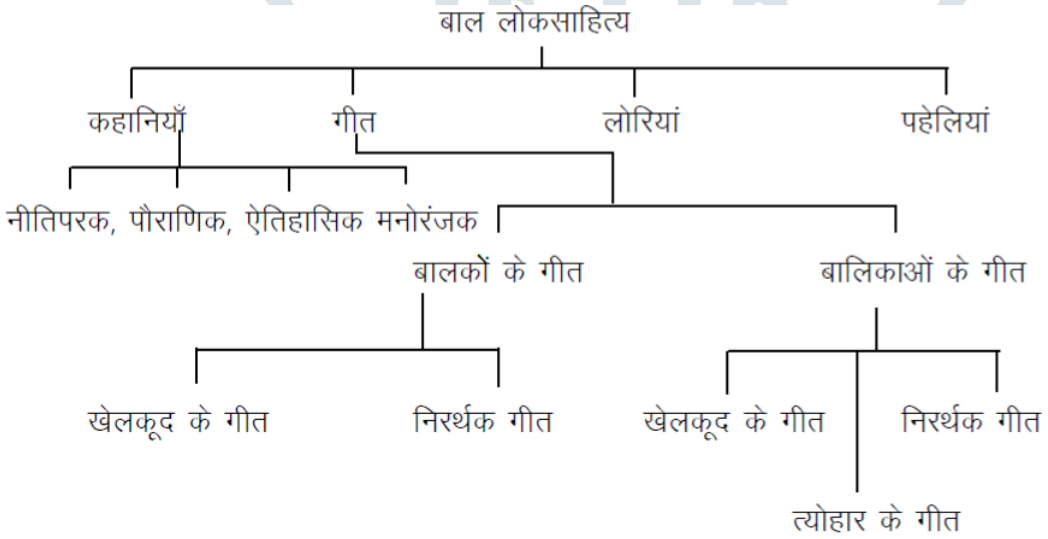

इसीलिए भारतीय लोक साहित्य ने भी अपनी रचनाओं के माध्यम से बाल लोकसाहित्य को समृद्ध बनाया है। लोक कथाओं में बहुत सारा बाल साहित्य बिखरा पड़ा है। बच्चों को सुलाने के लिए गायी जाने वाली लोरियाँ तथा उन्हें जगाने के लिए गायी जाने वाली प्रभातियाँ बाल साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं। इनके अतिरिक्त बाल कविताएँ, कहानियाँ, नाटक, उपन्यास, यात्रा–वृत्तान्त, संस्मरण तथा स्फुट बालोपयोगी लेखन बाल साहित्य के ही विविध रूप है।5

लोकसाहित्य का स्त्रोत वह बालोचित साहित्य है, जो माँ के मुख से बालक के कानों में पहली बार सुनाया जाता है और वह बाद में लोकसाहित्य कहलाता है। वस्तुतः हमारी जड़े लोक–साहित्य, लोक–संस्कृति तथा लोककथाओं में निहित हैं और वहीं से परम्परागत संस्कार मिलते हैं जो बचपन की लोककथाएं, कहानियां, आज भी हमें आधुनिक मूल्य बोध से अवगत करवाती है। इस प्रकार बच्चों के सर्वांगीण विकास और प्रगति की और ले जाने में बालसाहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका है। बालक जैसा पढ़ेगा या सुनेगा, वैसा ही प्रभाव उसके मानसपटल पर पड़ेगा। पुराने जमाने में लोग खाली समय में मनोरंजन के लिए किस्सागोई सुनाते थे जो बड़ी महत्वपूर्ण होती थी। घर की चहार दीवारी के भीतर बालक–बालिकाएं अपने बुजुर्गों से किस्से–कहानी सुनकर अपनी बाल–जिज्ञासा को शांत करते थे। किस्सागोई एवं किस्से कहानी आज भी सभी आयु वर्ग के लोगों में लोकप्रिय है।

''भारत एक संस्कृतियों, भाषाओं, क्षेत्रों के समन्वित रूप का नाम है। इसी दृष्टि से भारतीय साहित्य भी विशिष्ट है और भारतीय बालसाहित्य तो निश्चित रूप से विभिन्न भाषायी रूपों में, अपनी–अपनी क्षेत्रीय विशेषता को समेटने और पोषित करने वाला साहित्य है। प्राचीन परम्पराओं में संस्कृत, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश में रचित साहित्य में प्रेरणा का स्त्रोत

आधुनिक भारतीय भाषाओं को प्राप्त हुआ हैं। ऐसे वैचारिक धरातल पर आधुनिक भारतीय भाषाओं के बालसाहित्य को एक धरातल प्राप्त हुआ है। इस धरातल के साथ ही आज के वैज्ञानिक परिवेश ने भी इसे प्रभावित किया है।''6

प्रत्येक प्रान्त की अपनी निजी संस्कृति होती है, जिसका दर्शन वहां के लोक–उत्सवों में होता है। सामूहिक रूप में मनाए जाने वाले ये लोक उत्सव ही समाज की सभ्यता, संस्कृति तथा रीति–रिवाजों के परिचायक होते है। ऐसा ही एक लोकोत्सव हमारे उत्तर–पूर्व के प्रान्तों में बड़े हर्ष एवं उल्लास से मनाया जाता है, जिसे स्थानीय बोली में 'बिहु' कहा जाता है। इस उत्सव में छोटे–छोटे, अमीर–गरीब सभी बिना किसी भेदभाव के शामिल होते है। यह उत्सव सभी क्षेत्रों में अपने–अपने रीति–रिवाजों के अनुसार मनाया जाता हैं तथा यह उनका अपना त्यौहार होता है।

निष्कर्ष :

वर्तमान युग में बालसाहित्य की बहुत प्रगति हुई है। इस युग को स्वर्णिम युग कह सकते है। आज हिन्दी बालसाहित्य पर्याप्त विकसित और समृद्ध हो चुका है। इस युग का स्वर बालकों का सर्वांगीण विकास हैं। हिन्दी में इतना श्रेष्ठ और सुन्दर बालसाहित्य किसी समय नहीं लिखा गया था। इस युग की प्रमुख प्रवृत्ति है– आसपास की स्थिति को जानना तथा पुरानी परिपाटी से हटकर आधुनिक परिवेश का चित्रण करना। आज बालसाहित्य ने उन तमाम मूल्यों को प्राप्त कर लिया था जिसके बल पर वह अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य के साथ कदम से कदम मिलाने में सक्षम हो पाया। इस युग में बालसाहित्य की माँग बढी, बच्चों के अभिभावकों द्वारा इसका महत्व पहचान कर बच्चों को इसके प्रति आकर्षित किया। प्रकाशन प्रेसों ने भी बालसाहित्य को सुन्दर, आकर्षक, रंगीन–चित्रों के साथ छापना, प्रारम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि बच्चों को सचित्र गीत, कहानियाँ, कविताएँ आदि आकर्षित करने लगी तथा एक बड़ा पाठक वर्ग साहित्य से जुड़ा जिसकी आवश्यकता बालसाहित्य को हमेशा से थी। मनोरंजन के साथ–साथ वैज्ञानिक कहानियाँ एवं गीत इन दिनों खूब प्रकाशित हुए।

संदर्भ :

1. नंदन, नवम्बर, 1990, पृ. सं. 6

2. भाषा, मई–जून, 2007, पृ.सं. 23।

3. आशा शैली, दादी कहो कहानी, पृ. सं.–7,8 (मेरी अपनी बात)

4. हिन्दी बालसाहित्य : एक अध्ययन, डॉ. हरिकृष्ण देवसरे, पृ.सं. 71

5. समकालीन बालसाहित्य, परख और पहचान, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, पृ.सं. 15।

6. कश्फ़, नवम्बर – 2008, पृ.सं. 136।